नवसृष्टि के सृजनहार थे-प्रजापिता ब्रह्मा

परिवर्तन संसार का नियम है। दैवी सम्राज्य के बाद आसुरी सम्राज्य तथा आसुरी सम्राज्य के बाद दैवी सम्राज्य का आना, समय चक्र की अटल भावी है। नाजुक समय के दौर में कई आत्मायें दिव्य कर्मों के आधारमूर्त्त बनती है जिस कर्त्तव्य पथ पर चलकर मनुष्य, संसार परिवर्तन में सहयोगी बनते है। ऐसे ही इस कलियुगी दुनिया में एक साधारण आत्मा ने जन्म लिया, धीरे-धीरे उसका उज्ज्वल व्यक्तित्व निखरने लगा, उनकी गहरी सूक्ष्म दृष्टि एवं शान्त आकृति सभी को आकर्षित करने लगी। हीरों के व्यापार से सम्पत्ति की दुनिया में उन्होंने अपने कदम आगे बढ़ाये। सन् 1876 में सिन्ध में, लेखराज के नाम से इस कुलीन व्यक्ति ने जन्म लिया। व्यापार में अपनी कार्यकुशलता से वे लखपति बन गये। अचानक ही उनमें एक दिव्य परिवर्तन आया और उन्होंने सभी ऐश्वर्यो का त्याग कर दिया। उनके व्यक्तित्व में ट्रांस व साक्षात्कार की दिव्य विधियों द्वारा साधारणता से ऊंचा उठने एवं दिव्य अवतरण का एक अनोखा संगम हुआ जिसने आंतरिक अंधकार को दूर कर आत्म जागृति की ज्योति जगाई। स्वपरिवर्तन से विश्व परिवर्तन की श्रेष्ठ विधि अपनाकर मनुष्यों को इस दुनियां के दु:ख-दर्द से मुक्ति दिलाकर कुलीनता, प्रतिष्ठा एवं पवित्रता का जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त कराया और माताओं-बहनों के मधुर, कोमल स्वभाव एवं आन्तरिक शक्ति को पवित्र बनाकर उन्हें ईश्वरीय कार्य के लिए निमित्त बनाया। हंस समान मीठी और श्वेत वस्त्रधारिणी इन बहनों ने सादे जीवन का मिसाल सभी के सामने रखा तथा योग और तपस्या के सत्य सिद्धान्त सभी को सिखाए। उनका क्रांतिकारी लक्ष्य था दुनिया को नया बनाने का, जिसके लिए परमात्म-शक्ति ने दादा लेखराज का **'प्रजापिता ब्रह्मा'** नामकरण किया। उन्होंने इस ऊँच सेवा के लिए हीरों के धन्धे को छोड़कर मानव मात्र में छिपे हुए सच्चे हीरों की खोज में अपना जीवन लगा दिया । जिस प्रकार एक साधारण मक्खी के पंख मधु में फंस जाने से बाहर नहीं निकल सकती हैं, और उसकी भेंट में मधु-मक्खी, मधु को इकट्ठा करके वापस अपने घर की ओर उड़ती है, जहाँ पर शान्ति एवं खुशी है। इसी प्रकार बाबा ने शिक्षा दी कि अपने आपको जानो, अपनी दिव्यता को पहचानो और अपनी आन्तरिक यात्रा को फलीभूत करने के लिए इस बाह्य दुनिया के फुसलाने वाले वैभवों एवं पदार्थों का त्याग करो जिससे सुख-शान्ति प्राप्त होगी।

प्रजापिता ब्रह्मा में परमात्मा का दिव्य अवतरण हुआ। उन्होंने सर्व धर्म एवं आध्यात्मिक विद्याओं से परे राजयोग की श्रेष्ठ विधि द्वारा बुरे व्यक्तियों को अच्छे में परिवर्तन किया। भक्तों की श्रद्धा को ठेस नहीं पहुंचायी, लेकिन उन्होंने सर्व धर्म पिताओं की महान शिक्षाओं के सार को अपनाते हुए आत्माओं में नयी जागृति लाई। फैशन से भरपूर जीवन एवं भोग के वश असभ्य अनात्मवाद के उपयोग रूपी देह अभिमान और तामसिक आदतों से छुड़ाया तथा मांसाहार वा नशीले पदार्थो से बचाया। मनुष्य की स्मृति को दिव्य जीवन के प्रभावशाली स्तर तक उठाया, देह अभिमान से परिवर्तन कर आत्म जागृति लाई जो कि पापों से मुक्त होने का मार्ग है। इससे ही मानव-मात्र आत्मा के सत्य स्वरूप को जान सकते है। दादा लेखराज स्वंय सारी मानवता के दिलों का सर्जन बन गये और चाकू के बजाए ज्ञान से कब्रदाखिल दिव्यता को फिर से जागृत कर दिया। ऐसे महापुरुष, जिन्होंने आध्यात्मिक नीति एवं वैज्ञानिक विधि को आपनाया, को महान क्रान्तिकारी भी कह सकते हैं। अपने उन्नत विश्वास से, शान्ति की शक्ति से एवं अपनी साकार उपस्थिति से सभी की पालना की तथा घृणा को, विपत्तियों को एवं हिंसक लहरों को पराजित किया।

आज वे साकार में नहीं है। 18 जनवरी 1969 को उन्होंने इस पांच तत्वों के शरीर को त्यागा परन्तु आज भी उनका प्रभाव आध्यात्मिक रीति से 5 महाद्वीपों के सर्व नागरिकों पर फैलता जा रहा है। यह कहना कि वे अभी नहीं हैं--ईश्वरीय निंदा है। वे अभी भी लाखों के दिलों में योग की विधि द्वारा विराजमान है।

मानवता में आशाहीनता, दरिद्रता एवं असभ्यता को परिवर्तन करने वाली, उनकी यह संस्था एक दिव्य मिशनरी है।

अभी बाबा साकार में नहीं हैं परन्तु उनकी जीवन कहानी प्रेरणादायक है। कारलिल के शब्दों में -''कोई भी महान व्यक्ति बिना मतलब के नहीं जीता। दुनिया का इतिहास महान व्यक्तियों की जीवन कहानी ही तो है। प्रजापिता ब्रह्मा ने काफी कठिनाईयों का सामना किया तथा तामसिक शक्तियों के साथ युद्ध भी किया। परन्तु आखरीन विजय शिवबाबा की हुई जिन्होंने, इन्हें इस कार्य के लिए इंजीनियर बनाया। सामाजिक प्रतिकार करने वालों ने ओम मण्डली पर हमला किया, जिसके प्रत्यक्ष स्थापक ब्रह्मा बाबा थे और अदृश्य रूप से सुप्रीम नायक शिवबाबा थे। जनता की ओर से संगठित रूप में अवरोध हुए, कलंक लगाये गये, गलत सूचनाओं एवं राजनैतिक धमकियों का उपयोग किया गया, श्रद्धालु माताओं पर बंधन डाले गये तथा अन्य कई अशुद्ध प्रचार किए गये परन्तु सब कुछ निष्फल रहा। ये सभी निःसार युक्तियां विरोधियों द्वारा अपनायी गयी थीं। प्राचीन काल से विश्व का इतिहास साक्षी है कि आसुरी शक्ति पर हमेशा दिव्य शक्ति की ही विजय हुई है। यहाँ भी पिताश्री जी अपनी अचल अवस्था से विश्व के नव -निर्माण के कार्य में मानवता, दया एवं विश्व-बन्धुत्व की भावना से आगे बढ़ते रहे। आन्तरिक ज्योति, परम ज्योति की ओर तीव्रगति से बढ़ती ही गयी और सारे विश्व को प्रकाशयुक्त करते हुए नयी दुनिया की व्यवस्था के लिए अग्रदूत हुई। वर्तमान भौतिक शिष्टता के नष्टधर्मियों ने सामाजिक रस्मों को इतना असभ्य बना दिया है कि उनकी शक्ति का ह्रांस अनिवार्य है। उनके भस्मावशेष से फिर से एक बार सद्भावनाओं एवं शान्ति की वसंत बहार विकसित होगी। ओम मण्डली ने अनेक संकटों का सामना किया। भारत पाकिस्तान के विभाजन के बाद परमशक्ति के आदेशानुसार माऊण्ट आबू की भूमि में दिलवाड़ा के संगमरमर की अद्भुत कला के पास ही बाबा ने वह पवित्र जगह चुनी, जहाँ पर ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना की। पर्वत के शिखर, झील, मन्दिर एवं शान्ति के बीच प्रजापिता ब्रह्मा के प्रधान नेतृत्व में यह ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का आध्यात्मिक अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय बन गया। पिताश्री जी साकार रूप में नहीं है लेकिन फरिश्ते रूप में अपनी गहरी सूक्ष्म दृष्टि से लाखों को, चाहे दूर हों, पूर्व या पश्चिम के हों, ऊँच दर्जे के हों या नीचे दर्जे के सभी को चुम्बक की तरह अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। जो लोग आध्यात्मिक उन्नति के यात्री हैं वे माउण्ट आबू के शिखर पर दुनिया के विकारी बन्धनों को तोड़ने तथा विजयी आत्मा बनने की नई विधि सीखने आते हैं।

हम परमात्मा एवं प्रकृति के साथ अपने अनादि सम्बन्ध को भूल गये हैं। वैज्ञानिक प्राप्तियों के अभिमान में हम यह भूल बैठे हैं कि यह संसार कुछ नियमों में बंधा हुआ है, जिन नियमों का हम संदेह-वंश उल्लंघन कर देते हैं। उन नियमों को तोड़ने से आज भयानक स्थिति आ पहुंची है। अपनी शक्ति को प्राकृतिक वायुण्डल के अनुसंधान एवं उसे व्यवहार में लाने की ओर लगाने से हम इस ज्ञान को भूल गये हैं कि वास्तव में हम कौन हैं और क्या हैं। इन भौतिक प्राप्तियों के पीछे बिना सोचे-समझे दौड़ने से हम अपने स्वराज्य को खो चुके हैं। समस्याएं निष्ठुरता से बढ़ती हुई हमें अपने पांवों तले कुचल रही हैं।

आन्तरिक गहराई में उतरकर अपने आपको खोजो। मैं कौन हूँ? –इस पहेली का हल योग की विधि द्वारा कर सकते हैं। इसके लिए निरन्तर स्मृति रहे कि परमात्मा हमारे साथ है और उन्होंने हमें निमित्त बनाया है। आज पूरे विश्व में यह अभियान विशाल रूप धारण कर चुका है और विश्व के 130 देशों में लाखों लोग शामिल होकर विश्व परिवर्तन की सेवा में मददगार बने हैं। यह परिवर्तन की बेला में आप भी सहयोगी बने। यही प्रजापिता ब्रह्मा बाबा का तथा परमात्मा का ईश्वरीय संदेश है।

-: ओम शान्ति :-